महात्मा गांधी और उनके आर्थिक विचार

श्री भगत तिगोया [1]

[1] यूजीसी नेट अर्थशास्त्र.

ABSTRACT:

लेख महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों के बारे में अध्ययन करता है जो की भारतीय पृष्ठभूमि से सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक रूप से ऐतिहासिक महत्व रखते हैं। दुनिया का लगभग प्रत्येक व्यक्ति महात्मा गांधी के जीवन इतिहास से परिचित है महात्मा गांधी ने अपने राजनीतिक महत्व से अपने आर्थिक विचारों को दर्शाया है। महात्मा गांधी भारत के महान दार्शनिक थे जिन्होंने भारत में उपनिवेशवाद को हराने वाले राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी उन्होंने ब्रिटिश को ब्रिटिश के खिलाफ असहयोग, अहिंसा और शांतिपूर्ण संघर्ष से भाग लिया।महात्मा गांधी ने भारत को अंग्रेजी शासन के दौरान ही एक आर्थिक दृष्टिकोण प्रदान किया जिसमें उस समय की कई आर्थिक समस्याओं को उजागर किया उनका मुख्य ध्यान लघु, कुटीर उद्योगों की तरफ रहा तथा साथ ही उन्होंने स्वदेशी नीति को अपनाया था। उन्होंने दर्शाया कि किस प्रकार बाहरी आर्थिक शक्तियां घरेलू व छोटे उद्योगों का शोषण करती है, उन्हीं के दृष्टिकोण से लघु उद्योग की नीति को समझा जा सका और वही आगे जाकर उत्पादन के क्षेत्र में विकास हेतु मददगार साबित हुई, साथ ही उनकी बुनियादी शिक्षा भी मानव को एक आत्मनिर्भर मानव बनाने के पक्षधर में थी तथापि इस लेख का मुख्य ध्यान गांधीजी के आर्थिक क्षेत्र में दिए योगदान पर दिया गया है:

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th November 2024	30th November 2024

महात्मा गाँधी का सामान्य जीवन परिचय:

दुनिया का लगभग हर व्यक्ति गांधी जी के जीवन इतिहास से परिचित ही है, महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर गुजरात में हुआ था, उनके पिता करमचंद गुजरात रियासत में दीवान थे तथा माता पुतलीबाई धार्मिक पार्वती की एक विदुषी महिला थी। अपनी प्रारंभिक शिक्षा देश से प्राप्त करने के पश्चात वकालत की शिक्षा उन्होंने इंग्लैंड से प्राप्त की। उन्होंने सर्वप्रथम दक्षिणी अफ्रीका में वकालत प्रारंभ की तथा वहां भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ सत्याग्रह किया। 1915 में वह भारत वापस लौटे तथा उन्होंने यहां अंग्रेजी सरकार द्वारा हो रहे भारतीयों पर अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष किया, उनके प्रमुख आंदोलन मे 1917 में चंपारण आंदोलन, 1918 में खेड़ा आंदोलन, 1919 में खिलाफत आंदोलन, 1920 में असहयोग आंदोलन, 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन सभी महात्मा गांधी के स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा हैं।

महात्मा गांधी जी के आर्थिक विचार

महात्मा गांधी गांधी के आर्थिक दृष्टिकोण काफी सरल व सीधे थे जो कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने तथा स्वदेशी उद्योग, स्वदेशी निर्माण, घरेलू बाजारों को बढ़ावा देने से संबंधित थे जो कि न केवल भारत की ग्रामीण व पिछड़ी अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक था अपितु यह अंग्रेजी सरकार द्वारा जो भारत की अर्थव्यवस्था को नोचा जा रहा था उसके खिलाफ संघर्ष भी था महात्मा गांधी जी के आर्थिक विचारों को निम्न बिंदुओं की सहायता से समझने का प्रयास करते हैं :-

1.आर्थिक उद्देश्य:

अर्थशास्त्र के उद्देश्य के संबंध में महात्मा गांधी के विचार पश्चिमी संस्कृति से भिन्न थे जहां पश्चिमी संस्कृति अर्थशास्त्र को भौतिकता से संबंधित करती है वही गांधी जी ने अर्थशास्त्र को नैतिकता, मौलिकता तथा आध्यात्मिकता से संबंधित किया। महात्मा गांधी ने अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य मानवता के कल्याण से संबंधित किया उनके अनुसार अर्थशास्त्र का लाभ तभी है जब वह गरीब, निम्न वर्ग, निम्न तबके तथा पिछड़े लोगों का विकास कर पाए उन्हें बुनियादी सुविधाएं प्रदान कर सके।

2.आर्थिक आत्मनिर्भरता :

आत्मनिर्भरता से तात्पर्य है कि स्वयं पर निर्भर होना, देश में अपने संसाधनों से हर वस्तु का निर्माण करना और उन्हें उपयोग में लाना। आत्मनिर्भर होना हर व्यक्ति समाज और राष्ट्र का स्वप्न होता है गांधी जी ने कहा था की राष्ट्र की शक्ति उसकी आत्म निर्भरता में है, दूसरों से काम लेकर काम चलाने में नहीं। यह आत्मनिर्भरता ही है जो राष्ट्र को सर्वोपरि बन सकता है। महात्मा गांधी आर्थिक आत्मनिर्भरता व स्वावलंबन के कठोर पक्षधर थे, उनके अनुसार अगर कोई देश घरेलू वस्तुओं व घरेलू उद्योगों व घरेलू बाजारों का पक्षधर नहीं होगा तो अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास नहीं कर पाएगी। आर्थिक आत्मनिर्भरता की लिए महात्मा गांधी ने अनेक प्रयोग कीए जैसे चरखा चलाना, चक्की चलाना, सूत काटना, कपड़ा बुनना, व छोटे बड़े काम स्वयं करके लोगों के सामने एक आदर्श स्थापित कर दिया। इन प्रयोगों की सहायता से वह लोगों को आर्थिक दासता से मुक्त करवाना चाहते थे, इसी कड़ी में उनके द्वारा विदेशी कपड़ों का बहिष्कार कर ख़ादि अपनाना भी देश को आत्मनिर्भरता की राह दिखाता है।

3.ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रधानता:

महात्मा गांधी का अर्थशास्त्र ग्रामीण प्रधान अर्थशास्त्र था। महात्मा गांधी ने स्पष्ट किया कि यह ग्राम प्रधान अर्थव्यवस्था लघु एवं कुटीर उद्योगों पर आधारित होगी, इस व्यवस्था मे वह मशीनीकरण तथा पूंजीकरण की बजाय श्रमिकरण तथा सामान्यकरण को बढ़ावा देते हैं ताकि जहां एक और उत्पादन हो तो दूसरी तरफ रोजगार का भी सृजन किया जा सके। उन्होंने बताया कि लघु व कुटीर उद्योग पर आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उत्पादन मुख्तया स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होगा तथा स्थानीय उत्पादन, स्थानीय उपभोग, स्थानीय रोजगार और विवेकसम्वत वितरण इस ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सूत्रधार होंगे। आर्थिक स्वावलंबन, सादा जीवन-उच्च विचार, पंचायती राज, भूस्वामित्व, सर्वोदय से संबंधित जो भी ज्ञान गांधी जी ने दिए उनकी जड़ी गांवो में ही थी, गांधी जी के अनुसार जब तक गांव की दशा नहीं सुधारी जाएगी तब तक देश विकसित नहीं हो पाएगा।

4.गाँधीजी का आर्थिक सर्वोदय दर्शन:

सर्वोदय का अर्थ है सबका उदय अर्थात सर्वजन हिताय। इस अर्थ में महात्मा गांधी द्वारा सर्वप्रथम दलित व पीड़ितों को सबसे पहले ऊपर उठाना उनकी रक्षा करना। महात्मा गांधी

का सर्वोदय औद्योगिकरण पर आधारित न होकर ग्रामीण व कुटीर उद्योगों के विकास पर आधारित है। इस दर्शन में महात्मा गांधी ने ऐसे समाज की कल्पना की जहां सभी लोग गरीबी, अभाव, बीमारी, आर्थिक व सामाजिक दासता आदि समस्याओं से मुक्त होगे इस प्रकार के समाज में गरीबी और अमीर, किसान व भूस्वामी, मालिक व नौकर, जनता व राज्य के बीच किसी प्रकार का संघर्ष नहीं होगा।

5.लोक कल्याण और आर्थिक पक्ष :

महात्मा गांधी ने जिस प्रकार सामाजिक संदर्भ में मानवतावादी ,नैतिक व आध्यात्मिक तत्वों को प्रमुख माना ठीक उसी प्रकार उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में भी इन मूल्यों का समर्थन किया । उनके विचार में अर्थशास्त्र नैतिकता के महान मूल्य से पृथक नहीं हो सकता। गांधी जी ने आर्थिक क्षेत्र में नैतिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए मानवीय अर्थव्यवस्था का समर्थन किया तथा रस्किन व टॉलस्टॉय की भांति आर्थिक समस्याओं के संबंध में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी । महात्मा गांधी ने के अनुसार अर्थशास्त्र का अंतिम उद्देश्य कहीं ना कहीं मानव कल्याण ही है । महात्मा गांधी ने अर्थशास्त्र को पूंजीवाद तथा औद्योगीकरण की बजाय मानव कल्याण से जोड़ा । इस तरह गांधीवाद अर्थशास्त्र दरअसल मार्शल, पीगू, व किन्स के अर्थशास्त्र की भांति ना तो किसी सार्वभौमिक व सर्वकालिक सिद्धांतों की रचना ही करता हैं और न हीं कौटिल्य की भांति अर्थशास्त्र की पुस्तक का प्रस्तुतीकरण करता है अपितु यह तो उनके द्वारा जीवन के सभी पहलू पर विचार प्रस्तुत कर हमें वर्तमान जीवन के सामने आने वाली गंभीर आर्थिक समस्याओं की समाधान का हाल सुजाता है।

6.श्रम के प्रति सम्मान और मशीनीकरण की आलोचना :

गांधी जी श्रम के प्रति सम्मान की दृष्टि से देखते थे उनके हिसाब से प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक श्रम करना चाहिए वह स्वयं नित्य प्रति चरखा व चक्की चलाया करते थे उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को थोड़ी बहुत वस्तुओं का उत्पादन तो स्वयं करना चाहिए वहीं जहां श्रम के प्रति वह काफी सम्मान रखते थे तो दूसरी तरफ उन्होंने बढ़ते मशीनीकरण की आलोचना की वह मशीनीकरण की होड़ से मानव समाज को बचाना चाहते थे। उनके विचार काफी हद तक सिसमंडी के विचारों से मिलते-जुलते थे । मशीनीकरण बेरोजगारी भुखमरी तथा अभाव को बढ़ाने वाली होती है महात्मा गांधी मशीनीकरण के स्थान पर हस्तकारी तथा बड़े पैमाने पर उद्योग धंधों के स्थान पर लघु व कुटीर उद्योगों की स्थापना करना चाहती थी ।

7.महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम तथा साधन :

महात्मा गांधी ने अपने सत्याग्रह आंदोलन की सफलता को रचनात्मक कार्यक्रम व रचनात्मक साधनों के अंतर्गत ही देखा रचनात्मक कार्यक्रम के तहत उन्होंने विभिन्न कार्यक्रम रखे एकता, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारण, खादि, कुटीर उद्योग, गांव की सफाई, बुनियादी शिक्षा, सर्वधर्म समभाव, आर्थिक समानता, किसानों व मजदूरों के हित इत्यादि । गांधी जी ने रचनात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक सभी प्रकार की समस्याओं को समाहित किया उनका अभिमत था कि सत्याग्रह के लिए अनुशासन आत्म बलिदान समाज सेवा आदि के प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

8. उदारीकरण वैश्वीकरण और निजीकरण के प्रति महात्मा गांधी के विचार :

आर्थिक क्षेत्र में वैश्वीकरण के नाम पर जिस तरह विश्व स्तर पर आर्थिक पूंजीवाद से मानवता को समरत किया जा रहा है गांधी ने इस खतरे को समझ कर ही स्वदेशी तथा विकेंद्रीकरण का विचार रखा था, उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के दौर में पूंजीवादी का लक्ष्य अधिकतम उत्पादन तथा लाभ कमाना होता है, यह व्यवस्था उत्पादन यांत्रिक होती है परिणाम स्वरुप समाज में पूंजी की प्रधानता बढ़ती है तथा अमीर गरीब की खाई बढ़ती जाती है, वहीं दूसरी तरफ श्रमिक वर्ग का शोषण होता है। वे निजीकरण की अपेक्षा साम्यवाद के पक्षधर थे । वे लोक कल्याणकारी विचारधारा की समर्थक थे, महात्मा गांधी ने आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए संरक्षण का सिद्धांत प्रस्तुत किया। वे निजीवाद तथा वैश्वीकरण से दूर ऐसी अर्थव्यवस्था का निर्माण करने में विश्वास रखते थे जो मानवीय मूल्यों के साथ मानवीय कल्याण का विकास करें ।

9.आय व आवश्यकताओं के बीच संतुलन:

गांधी जी ने आय और आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाए रखने की बात कही, गांधीजी ने इस आर्थिक घटनाक्रम को अच्छे से जान चुके थे की आवश्यकताओं की तुलना में व्यक्ति के पास साधन सीमित होते हैं और यही आय वह आवश्यकताओं का असंतुलन विभिन्न आर्थिक समस्याओं का कारण बनता है इस असंतुलन को तभी दूर किया जा सकता है जब व्यक्ति अपनी आवश्यकता को अपनी आय के अनुकूल करें गांधी जी ने अनुसार व्यक्ति को स्थाई सुख शांति के लिए आवश्यक है कि वह अपनी आवश्यकताओं को घटकर व्यय को कम करें तथा अपनी आय को बढ़ाने का प्रयत्न करे।

10.महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा:

मानव के आर्थिक विकास के लिए महात्मा गांधी का मानना था कि भारतीय युवाओं को ऐसी शिक्षा दी जाए जिनकी सहायता से वे इस योग्य बन पाए कि वह अपने जीवन यापन हेतु योग्य बन सके तथा विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाकलापों में सक्षम हो सके तभी वे नागरिक देश के आर्थिक विकास तथा आर्थिक कल्याण में अपना योगदान दे पाएंगे गांधी जी के अनुसार प्रत्येक नागरिक को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए कि वह अपने दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर पाए तथा उन्होंने शिक्षा को एक मानव पूंजी का साधन माना।

निष्कर्ष

:उक्त लेख से स्पष्ट है कि महात्मा गांधी के विचार भारतीय दर्शन के लिए काफी महत्वाकारी सिद्ध हुए हालांकि महात्मा गांधी पश्चात दर्शन की तरह अर्थशास्त्र को मात्र पूंजी से नहीं जोड़ते हैं उनका दर्शन मानव कल्याण तथा नैतिकता से ज्यादा प्रभावित लगता था उनका आर्थिक दर्शन भारतीय पृष्ठभूमि के उस समयावधि के हिसाब से काफी हद तक न्याय पूर्ण था । उनके दर्शन में आर्थिक आत्मनिर्भरता, मानव कल्याण, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, स्वदेशी उत्पादों का उपयोग इत्यादि मुख्य बातें थी जो उसे समय भारत जैसे किसी नए उभरते राष्ट्र के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण थी ।

REFERENCES

1. गांधीचिंतन राज्य एवं लोक कल्याण : डॉ पंकज भारद्वाज 2022 आर्थिक विचारों का इतिहास : डॉ जै सी पंत, डॉ ए के पंत 2007 आर्थिक विचारों का इतिहास : डॉ जै सी पंत, डॉ ए के पंत 2009 हिस्ट्री आफ एजुकेशन इंडिया: जे एन अरोरा, धनपत राय एंड संस 1972

2. राज्य एवं लोक कल्याण : डॉ पंकज भारद्वाज 2022

3. आर्थिक विचारों का इतिहास : डॉ जै सी पंत,डॉ ए के पंत 2007 आर्थिक विचारों का इतिहास : डॉ जै सी पंत,डॉ ए के पंत2009 हिस्ट्री आफ एजुकेशन इंडिया: जे एन अरोरा, धनपत राय एंड संस 1972

4. आर्थिक विचारों का इतिहास: एम एल झींगन, एम गिरीजा, एल शशिकला 2006